ICSSR Sponsored
ISSN: 2319-9997
Journal of Nehru Gram Bharati University, 2025; Vol. 14 (I):200-211

सामान्य एवं विशिष्ट विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के व्यक्तित्व का तुलनात्मक अध्ययन

देवेन्द्र कुमार सिंह एवं शिवाश्रेय यादव
शिक्षक-शिक्षा विभाग,
नेहरू ग्राम भारती (मानित विश्वविद्यालय), प्रयागराज।
Email: devendrakumarsingh44151@gmail.com

Received: 03.04.2025 Revised:22.05.2025 Accepted: 07.06.2025

सारांश

समस्या कथन के अन्तर्गत ''सामान्य एवं विशिष्ट विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के व्यक्तित्व का तुलनात्मक अध्ययन'' है। प्रस्तुत अध्ययन में वर्णनात्मक अनुसंधान के अन्तर्गत सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया है। प्रस्तुत अध्ययन में प्रयागराज जनपद के सत्र् 2024-2025 के विशिष्ट स्तर के सामान्य एवं विशिष्ट विद्यार्थियों को समष्टि के रूप में सम्मिलित किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन के अन्तर्गत यादृच्छिक न्यादर्श विधि का प्रयोग किया गया है। अध्ययन के उद्देश्यों के अनुसार प्रयागराज जनपद के माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् 400 विद्यार्थी (250 सामान्य विद्यार्थी एवं 150 विशिष्ट विद्यार्थी) का न्यादर्श हेतु चयन किया गया है। सामान्य एवं विशिष्ट विद्यार्थियों के व्यक्तित्व से सम्बन्धित आँकड़े एकत्रित करने हेतु व्यक्तित्व परीक्षण मापनी के रूप में डॉ.अरूण कुमार सिंह एवं डॉ. आशीष कुमार सिंह की "बहुआयामी व्यक्तित्व परीक्षण मापनी (डिफरेंशियल पर्सनालिटी इन्वेंटरी (डीपीआई)" द्वारा छात्रों के विशिष्ट व्यक्तित्व लक्षणों को मापने के प्रयोग किया गया

प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु मध्यमान, मानक विचलन, मानक त्रुटि एवं टी-अनुपात सांख्यिकी विधियों का प्रयोग किया है। निष्कर्ष में पाया गया कि ग्रामीण सामान्य विद्यालय के विद्यार्थियों कि तुलना में शहरी सामान्य विद्यालय में विद्यार्थियों के व्यक्तित्व की तुलना में ग्रामीण सामान्य विद्यालय के विद्यार्थियों में व्यक्तित्व के निर्णयकता आयाम है जबकि ग्रामीण एवं शहरी सामान्य विद्यालय के विद्यार्थी व्यक्तित्व के जिम्मेदारी, मित्रता, जिज्ञासा,प्रभुत्व एवं आत्म अवधारणा आयामों पर एक दूसरे से भिन्न नहीं हैं।

मुख्य शब्द- *सामान्य, विशिष्ट विद्यालय, व्यक्तित्व*

प्रस्तावना-

शिक्षा द्वारा समाज में परिवर्तन आता है जो सामाजिक गतिशीलता का द्योतक है। यदि इस प्रकार के परिवर्तन उपस्थित न हो या किन्ही कारणोंवश प्रभावहीन रहते हैं जिससे समाज की प्रभावशीलता समाप्त होने लगती है। ऐसी अवस्था में सामाजिक अर्थ सामान्यतः दासता के अभिशाप के रूप में प्रकट होता है। समाज में जड़ता उपस्थित होने पर व्यक्ति परिस्थितयों के अधीन हो जाता है, उसकी विचारशक्ति क्षीण होने लगती है और सामाजिक जीवन रूढ़िवादी और निष्क्रिय होने लगता है, यह परिस्थिति वास्तव में बड़ी भयावह है। मनुष्य को मनुष्य बनाने में समाज का सबसे महत्वपूर्ण योगदान होता है। समान भौतिक साधनों के होने के बाद भी यदि किसी व्यक्ति को समाज एवं संस्कृति का सम्पर्क नहीं मिलता तो उसका विकास नहीं होता और वह पशुवत रह जाता है। समाज ही व्यक्ति के शरीर, मस्तिष्क और व्यक्तित्व के अन्य अंगों को विकसित करता है। आज का विकसित व्यक्ति सदियों तक सामाजिक गतिहीनता की भयावह परिस्थितियों को प्रत्यक्ष अनुभव कर चुका है। इस काल में वह उन्नति एवं अवनति दोनों परिस्थितियों से गुजरते हुए समाज का विकास किया। अतः इस बात का प्रत्यक्ष प्रमाण है कि समाज ही व्यक्ति के व्यक्तित्व का निर्माता होता है और सामाजिक गतिशीलता उसको विकसित और परिमार्जित करती रहती है।

शिक्षा आत्मको अभिव्यक्ति की एक प्रक्रिया है। एक व्यक्ति शिक्षा के माध्यम से खुद-अभिव्यक्त करता है। शिक्षा के माध्यम से इन जन्मजात शक्तियों और क्षमताओं का विकास होता है। यह समाज के साथ एक व्यक्ति के समायोजन का एक साधन है। यह एक ऐसी प्रक्रिया है जिसक े द्वारा उसे समाज के विचारों और भोजन, रीतिरिवाजों और परंपराओं के साथ उचित -लाया जाता है। बच्चा जन्म के समय कमजोर संबंध में, असहाय और अज्ञानी होता है। लेकिन वह धीरेधीरे बढ़ता और विकसित होता है। वह ज्ञान और कौशल प्राप्त करता है। वह विचारों को -कार्यों में बदलता है और अपनी आवश्यकताओं को पूरा करता है। वह अपने वातावरण के अनुसार अपने व्यवहार को बदलता है। व्यक्ति के ऐसे परिवर्तन, विकास और वृद्धि ही उसकी शिक्षा है। यह उसके सीखने और परिपक्व होने का परिणाम है सीखना व्यवहार का संशोधन है।

प्रत्येक व्यक्ति कुछ आनुवंशिक क्षमताओं के साथ पैदा होता है। जिसका खुलासा परिपक्वता और जीवन में एक व्यक्ति के अनुभवों पर निर्भर करता है। यहां तक कि माता-पिता भी अलग-अलग तरीके से प्रतिक्रिया करते हैं। -अलग विशेषताओं को दिखाने वाले शिशुओं पर अलग इसलिए एक पारस्परिक प्रक्रिया जन्म से शुरू होती है जो व्यक्ति के बड़े होने पर अन्य लक्षणों का विकास होता है। यद्यपि किसी व्यक्ति के सभी अनुभव उसके अपने होते हैं, लेकिन उन्हें मोटे तौर पर दो श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है- सामान्य अनुभव और अनोखे अनुभव। समाज या संस्कृति में बढ़ते हुए व्यक्ति के पास ऐसे अनुभवों का बड़ा हिस्सा होता है जो उस समान संस्कृति से संबंधित लगभग सभी सदस्यों के लिए सामान्य होते हैं। अधिकांश लोग सामाजिक

और सांस्कृतिक रूप से स्वीकृत तरीकों से व्यवहार करते हैं। प्रत्येक संस्कृति और समाज व्यक्ति पर कुछ दबाव डालता है जो उसके व्यवहार को मोटे तौर पर समान तरीकों से प्रभावित करता है। लेकिन ऐसी समानताएं मानव व्यक्तित्व को समझने में हमारी मदद नहीं करती हैं क्योंकि ये केवल एक समूह के तरीके हैं। किसी व्यक्ति को उसके लक्षणों के अनूठे पैटर्न से संपन्न करने वाले उसके अपने अनूठे अनुभव हैं। जैविक और शारीरिक अंतर व्यक्तियों को सांस्कृतिक सेटिंग द्वारा प्रदान की गई समान उत्तेजना के लिए अलग तरह से प्रतिक्रिया करते हैं। उनका व्यक्तित्व उनके अनूठे अनुभवों से भी आकार ले सकता है, ये अनुभव प्रत्येक व्यक्ति के लिए अद्वितीय होते हैं, इससे यह स्पष्ट है कि किसी व्यक्ति की जैविक क्षमता, उसके सामान्य और अद्वितीय अनुभव के साथ अंतःक्रिया करते हुए, उसके व्यक्तित्व की रूपरेखा तैयार करती है।

पूर्व माध्यमिक स्तर की शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थी पूर्णतः किशोरावस्था में प्रवेश कर रहे होते है। किशोरावस्था युवावस्था की नींव होती है जिसमें जीवन का सम्पूर्ण भविष्य निहित होता है और यह अवस्था बालक-बालिकाओं की चरमावस्था होती है। इस काल में बालक-बालिकाओं में शारीरिक, मानसिक एवं संवेगात्मक दृष्टि से महत्वपूर्ण क्रान्तिकारी परिवर्तन होने प्रारंभ हो जाते है। पूर्व माध्यमिक स्तर की शिक्षा किसी राष्ट्र की मानवशक्ति के विकास का आधार होती है। यह शिक्षा उच्च शिक्षा की नींव का भी कार्य करती है। पूर्व माध्यमिक स्तर के बालक साथ अपने-बालिकाओं में अपने विषय के साथ-शारीरिक विकास को लेकर भी चिन्तित रहते है। छात्र भविष्य में किस प्रकार की शिक्षा ग्रहण करेगा, वह आगे चलकर व्यावसायिक शिक्षा या साहित्यिक शिक्षा को अपने भविष्य के रूप में चुनेगा इस सभी का निर्धारण पूर्व माध्यमिक स्तर के शिक्षा में ही होता है।

सामान्य विद्यालयी शिक्षा एक ऐसी शैक्षिक प्रणाली है जिसका उद्देश्य जाति, पंथ, समुदाय, भाषा, लिंग, आर्थिक स्थिति, सामाजिक स्थिति एवं शारीरिक-मानसिक क्षमता के अनुरूप सभी बच्चों को समान गुणवत्ता की शिक्षा प्रदान करना। सामान्य विद्यालयी शिक्षा को सभी प्रकार की असमानताओं को बाहर करने और सभी प्रकार की विविधताओं को शामिल करने के लिए डिजाइन किया गया है। ये विद्यालय विविधिताओं से युक्त होते हुए भी लोकतांत्रिक प्रणाली के तहत कार्य करते हैं जो सभी विद्यार्थियों की सामान्य शिक्षा के अनुकूल हो।

विशिष्ट शिक्षा एक व्यापक शब्द है जिसका उपयोग कानून द्वारा विशेष रूप से डिज़ाइन किए गए निर्देश का वर्णन करने के लिए किया जाता है जो किसी विकलांग बच्चे की विशिष्ट आवश्यकताओं को पूरा करता है। ये सेवाएँ सार्वजनिक स्कूल प्रणाली द्वारा प्रदान की जाती हैं और निःशुल्क हैं। सेवाओं में, कक्षा में, घर पर, अस्पतालों और संस्थानों में निर्देश शामिल हो सकते हैं। सीखने की अक्षमताएँ हल्के से लेकर गंभीर तक के विकारों की एक विस्तृत श्रृंखला को कवर करती हैं। इनमें मानसिक, शारीरिक, व्यवहारिक और भावनात्मक अक्षमताएँ शामिल हो सकती हैं। शिक्षण के विभिन्न दृष्टिकोण, प्रौद्योगिकी का उपयोग, एक विशेष रूप से अनुकूलित

शिक्षण क्षेत्र या संसाधन कक्ष से लाभ होने की संभावना है। विशेष शिक्षण तकनीकों या विभिन्न शैक्षिक कार्यक्रमों से भी लाभ उठाया जा सकता है, लेकिन विशेष शिक्षा शब्द का उपयोग आम तौर पर उन छात्रों के निर्देश को इंगित करने के लिए किया जाता है जिनकी विशेष ज़रूरतें स्वतंत्र रूप से या एक साधारण कक्षा में सीखने की उनकी क्षमता को कम करती हैं और प्रतिभाशाली शिक्षा को अलग से संभाला जाता है। अधिकांश विकसित देशों में शिक्षक शिक्षण विधियों और वातावरण को संशोधित कर रहे हैं ताकि सामान्य शिक्षा वातावरण में अधिकतम छात्रों को सेवा दी जा सके। विकसित देशों में विशेष शिक्षा को अक्सर स्थान के रूप में कम और हर स्कूल में उपलब्ध सेवाओं की एक श्रृंखला के रूप में अधिक माना जाता है। एकीकरण सामाजिक कलंक को कम कर सकता है और कई छात्रों के लिए शैक्षणिक उपलब्धि में सुधार कर सकता है।

भारत में पृथक शिक्षा 19वीं सदी के अंतिम दो दशकों में आई। 1880 के दशक की शुरुआत में, ईसाई मिशनरियों ने धर्मार्थ गतिविधियों के रूप में विशेष ज़रूरतों वाले बच्चों के लिए स्कूल शुरू किए। बधिरों और गूंगे लोगों के लिए पहला पृथक स्कूल 1883 में बॉम्बे में स्थापित किया गया था और अंधे लोगों के लिए 1887 में अमृतसर में ऐनी शार्प द्वारा स्थापित किया गया था। मानसिक रूप से विकलांग लोगों के लिए पहला स्कूल 1918 में कुर्सेओंग में स्थापित किया गया था (मिश्रा, 2000)। इस प्रकार, पृथक स्कूल बच्चों के विशिष्ट समूह के लिए हैं।

वर्तमान में, लगभग दो प्रतिशत बच्चे विशेष विद्यालय में जाते हैं और अधिकांश के पास एक विशेष योजना है। विशेष विद्यालयों में शिक्षित होने वाले बच्चों की पहचान सीखने में कठिनाई या विकलांगता के रूप में की गई है जिसके लिए उनके लिए विशेष शैक्षिक प्रावधान किए जाने की आवश्यकता है। उपलब्ध विशेष विद्यालय का प्रकार क्षेत्र दर क्षेत्र अलग-अलग होता है। कुछ राजकीय विद्यालय हैं, कुछ अकादमी हैं, कुछ स्वतंत्र हैं। जहाँ बच्चे अपनी ज़रूरतों का मूल्यांकन किए जाने के दौरान जाते हैं जबकि अन्य में विशेष विद्यालय सेटिंग के भीतर प्रारंभिक वर्षों की कक्षाएँ होती हैं। कुछ विशेष विद्यालय सामान्य हैं, जो इन चार व्यापक क्षेत्रों में से कुछ या सभी सहित कई तरह की ज़रूरतों को पूरा करते हैं। अन्य एक विशेष क्षेत्र में विशेषज्ञता रखते हैं। इसके अलावा, कुछ विद्यालय उपरोक्त श्रेणियों में भी विशेषज्ञता रखते हैं, जैसे कि ऑटिज़्म या भाषण और भाषा विद्यालय। आपको अपने बच्चे के लिए विशेष या मुख्यधारा के विद्यालय के बीच सीधा चुनाव नहीं करना पड़ सकता है। कुछ मुख्यधारा के विद्यालयों में विशेष इकाइयाँ या संसाधन आधार होते हैं, ताकि विशेष आवश्यकता वाले बच्चे विशेषज्ञ शिक्षण प्राप्त कर सकें और मुख्यधारा के संसाधनों तक भी पहुँच सकें और अपने साथियों के समूह के साथ अधिक व्यापक रूप से घुल-मिल सकें।

मनोविज्ञान में व्यक्तित्व का अर्थ रोज़मर्रा की बातचीत की तुलना में कहीं ज़्यादा व्यापक है। मनोवैज्ञानिकों द्वारा इस्तेमाल किए जाने वाले व्यक्तित्व में न केवल मानव व्यवहार का वह सतही

पहलू शामिल है, जिसका आम लोग इस शब्द का इस्तेमाल करते समय उल्लेख करते हैं, बल्कि सामाजिक और भावनात्मक पहलुओं की पूरी श्रृंखला भी शामिल है। वे पहलू जो हममें से हर किसी को कुछ मायनों में अद्वितीय बनाते हैं, लेकिन साथ ही दूसरों के समान भी। जिस तरह से कोई व्यक्ति अपने परिवेश के साथ तालमेल बिठाता है, वह व्यक्तित्व का एक पहलू है। जिस तरह से वह तालमेल बिठाना सीखता है, वह दूसरा पहलू है।

व्यक्तित्व एक अवधारणा है जिसका उपयोग विभिन्न स्थितियों में व्यवहार की स्थिरता और निरंतरता, व्यक्ति की विशिष्टता और व्यक्तिगत अंतर को पहचानने के लिए किया जाता है। व्यक्तित्व को परिभाषित करने के लिए मनोवैज्ञानिकों के बीच विवाद हैं। व्यक्तित्व की कई परिभाषाओं में से, सबसे आम तौर पर स्वीकृत परिभाषा ऑलपोर्ट (1937) द्वारा दी गई है। उन्होंने कहा कि मूल रूप से व्यक्तित्व ग्रीक नाटक में इस्तेमाल किए जाने वाले नाटकीय मुखौटे को दर्शाता है। किंवदंती है कि एक लोकप्रिय अभिनेता को कुछ कॉस्मेटिक दोष को छिपाने के लिए मुखौटा पहनना पड़ा था। समय के साथ इस शब्द ने कई अर्थ ग्रहण किए।

मानव व्यक्तित्व एक अद्भुत जटिल संरचना है, जो उद्देश्यों, भावनाओं, आदतों और विचारों को एक पैटर्न में बहुत ही सूक्ष्मता से बुना गया है, जो बाहरी दुनिया के खिंचाव और धक्के को संतुलित करता है। व्यक्तित्व उसके अस्तित्व का योग है और इसमें शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, भावनात्मक और बौद्धिक पहलू शामिल हैं। "व्यक्ति का व्यक्तित्व उसकी धारणा, कल्पना, दृष्टिकोण, प्रवृत्ति, आदतें, मूल्य, रुचि और खुद के बारे में उसकी भावनाओं और उसके आत्म-मूल्य को दर्शाता है। बुद्धि, उपलब्धि, प्रेरणा, समायोजन के तरीके, ये सभी और बहुत कुछ मानव व्यक्तित्व का निर्माण करते हैं।

मॉर्टन प्रिंस ने वर्णन किया, है कि "व्यक्तित्व उन सभी जैविक जन्मजात स्वभावों और प्रवृत्तियों का योग है जो अनुभवों द्वारा प्राप्त होते हैं।"

गॉर्डन डब्ल्यू ऑलपोर्ट ने कहा "व्यक्तित्व व्यक्ति के भीतर उन मनोभौतिक प्रणालियों का गतिशील संगठन है जो पर्यावरण के लिए व्यक्ति के अद्वितीय समायोजन को निर्धारित करते हैं।" किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व विकास पर शिक्षा का बड़ा प्रभाव पड़ता है। आमतौर पर माना जाता है कि व्यक्तित्व के निर्माण में शिक्षा दूसरा सबसे महत्वपूर्ण प्रभाव है। इस संबंध में घर स्पष्ट रूप से प्राथमिक एजेंसी है। हालांकि, यह व्यापक रूप से मान्यता प्राप्त है कि स्कूल एक सामाजिक एजेंसी है जो उस समूह के मूल्यों को दर्शाती है जो उस समाज का निर्माण करता है। परिणामस्वरूप, स्कूली बच्चा जल्दी ही अपने सामाजिक व्यवस्था के "मानदंडों" को आत्मसात करना शुरू कर देता है। शिक्षा सूचना के भंडार के हस्तांतरण से कहीं अधिक है। यह बच्चे के व्यक्तित्व को दैनिक अनुभवों से समृद्ध करती है जो उसे अपनी दुनिया की व्यापक समझ प्रदान करती है। जैसे-जैसे उपयोगी ज्ञान जमा होता है, वैसे-वैसे बच्चे की अपनी सांस्कृतिक विरासत की सराहना भी बढ़ती है। किसी भी संस्कृति में स्कूल उस संस्कृति की प्रथाओं और मूल्यों के लिए

तैयार होता है। यह विकास के भावात्मक पहलुओं के साथ-साथ अधिक विशुद्ध बौद्धिक प्रकृति के पहलुओं पर भी जोर देता है। यह शिक्षक ही है जो विकासशील बच्चे को ब्रह्मांड की कम से कम कुछ प्राकृतिक घटनाओं की समझ से प्राप्त होने वाले लाभों की खोज करने में सक्षम बनाता है। कक्षा में शिक्षक और छात्रों के बीच संबंध और प्रस्तुत की जाने वाली पाठ्यचर्या सामग्री दोनों ही व्यक्तिगत दृष्टिकोण, मानसिक स्वास्थ्य और सामान्य व्यक्तित्व पैटर्न के निर्धारण में शक्तिशाली प्रभावों का प्रतिनिधित्व करते हैं। व्यक्तित्व के बारे में कई अन्य विचार भी व्यक्त किए जाते हैं, ऐसा इसलिए है क्योंकि व्यक्तित्व की अवधारणा अलग-अलग लोगों में इतनी व्यापक रूप से भिन्न होती है कि व्यक्तित्व की संक्षिप्त परिभाषा देना बेहद मुश्किल है। किशोरावस्था को बहुत तनाव और दबाव की अवस्था कहा जाता है, यह बच्चों के व्यक्तित्व के शारीरिक, संज्ञानात्मक, सामाजिक, भावनात्मक और यौन पहलुओं के संबंध में गहन वृद्धि और विकास की अवधि है।

व्यक्तित्व अद्वितीय और विशिष्ट है। हम में से हर एक के पास खुद में एक अद्वितीय प्रोटोटाइप है। कोई भी दो व्यक्ति, यहाँ तक कि समान जुड़वाँ भी किसी भी समय अवधि में एक ही तरह से व्यवहार नहीं करते हैं। हम में से हर कोई समायोजन करने के लिए विशिष्ट तरीकों की पुष्टि करता है। व्यक्तित्व में एक व्यक्ति के बारे में सब कुछ शामिल होता है। यह वह सब है जो एक व्यक्ति के पास होता है और इसमें सभी व्यवहार पैटर्न शामिल होते हैं। नतीजतन, व्यक्तित्व केवल इतने सारे लक्षणों या विशेषताओं का संकलन नहीं है जिसे व्यक्तित्व के रूप में जाना जाता है। यह एकीकृत पूरे में सभी गुणों, लक्षणों, व्यवहारों, विशेषताओं और कार्यों का एक संगठन है। व्यक्तित्व स्थिर नहीं है, यह गतिशील है और हमेशा परिवर्तन और संशोधन की प्रक्रिया में रहता है। यह परिवेश में किसी के अद्वितीय समायोजन के लिए आवश्यक है। पर्यावरण के साथ समायोजन की प्रक्रिया निरंतर होती है। प्रत्येक व्यक्तित्व विरासत और पर्यावरण का उत्पाद है। दोनों बच्चे के व्यक्तित्व के विकास में काफी योगदान देते हैं। दुनिया भर में मनुष्यों के समायोजन पैटर्न में व्यक्तिगत अंतर हैं। इस तरह के अंतर सामाजिक संगठनों की छोटी इकाइयों जैसे समुदाय, स्कूल और यहां तक कि घर में भी बनते हैं। व्यक्तियों के अपने वातावरण के साथ बातचीत के भिन्न-भिन्न पैटर्न के परिणामस्वरूप समायोजन के विविध पैटर्न विविध व्यक्तित्व संरचनाओं को जन्म देते हैं।

शोध की आवश्यकता एवं महत्व -

हर व्यक्ति जीवन में सफलता की आकांक्षा रखता है। यह आकांक्षा सबसे महत्वपूर्ण सकारात्मक पहलुओं में से एक है। यह दैनिक जीवन को सुखद बनाता है और जीवन की चुनौतियों का सामना करने में सक्षम बनाता है। जीवन की चुनौतियों का लगातार सामना करने से व्यक्ति मजबूत बनता है और इससे वह भविष्य की जीवन स्थितियों का आत्मविश्वास और जोश के साथ सामना कर पाता है। अक्सर कहा जाता है कि जो व्यक्ति जीवन में गंभीर चुनौतियों का

सामना करता है, वह कम चुनौतियों का सामना करने वालों की तुलना में पूर्ण विकसित व्यक्तित्व का निर्माण करता है। एपीजे अब्दुल कलाम के अनुसार, अद्वितीय बनने के लिए चुनौती सबसे कठिन लड़ाई लड़ना है जिसकी कोई कल्पना भी नहीं कर सकता है जब तक कि आप अपनी मंजिल तक नहीं पहुंच जाते। जीवन में चुनौतियों पर सफलतापूर्वक काबू पाने के लिए सकारात्मक मानसिकता और अटूट इच्छा शक्ति आवश्यक गुण हैं। विकलांगता व्यक्तियों में सकारात्मक और नकारात्मक दोनों तरह से कार्य कर सकती है, यह किसी को उदास करती है, जबकि यह दूसरों में प्रेरक और चुनौतीपूर्ण कारक के रूप में कार्य करती है। मानव इतिहास में इस बात के प्रमाण भरे पड़े हैं कि उचित वातावरण और अवसर मिलने पर शारीरिक रूप से अक्षम व्यक्ति अपना भाग्य खुद बनाता है और समाज में महत्वपूर्ण योगदान देता है। विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी की नित्य नये अविष्कारों ने आज मानव समाज में महान परिवर्तन ला दिये हैं। इन परिवर्तनों के फलस्वरूप उसके स्वरूप, आकार आदि में परिवर्तन आ गया है, साथ ही मानवीय सम्बन्धों में जटिलता आ गयी हैं।

समस्या कथन -'' सामान्य एवं विशिष्ट विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के व्यक्तित्व का तुलनात्मक अध्ययन''

अध्ययन का उद्देश्य- समस्या के प्रस्तुत अध्ययन के निम्नलिखित उद्देश्य है-

1. सामान्य विद्यालयों में अध्ययनरत् शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों के व्यक्तित्व का तुलनात्मक अध्ययन।
2. विशिष्ट विद्यालयों में अध्ययनरत् शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों के व्यक्तित्व का तुलनात्मक अध्ययन।

अध्ययन की परिकल्पनाएं- प्रस्तुत अध्ययन में शून्य परिकल्पना का प्रयोग किया गया है-

1. सामान्य विद्यालयों में अध्ययनरत् शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों के व्यक्तित्व का सार्थक प्रभाव पड़ता है।
2. विशिष्ट विद्यालयों में अध्ययनरत् शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों के व्यक्तित्व का सार्थक प्रभाव पड़ता है।

शोध विधि -प्रस्तुत अध्ययन में वर्णनात्मक अनुसंधान के अन्तर्गत सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया है।

जनसंख्या -समष्टि/ईकाइयों के समूचे समूह को जिसके लिए चर का मान निकालना अभीष्ठ है, उसे समष्टि कहते हैं। प्रस्तुत अध्ययन में प्रयागराज जनपद के सत्र 2025-2024 के पूर्व माध्यमिक स्तर के सामान्य एवं विशिष्ट विद्यार्थियों को समष्टि के रूप में सम्मिलित किया गया है।

न्यादर्श -प्रस्तुत अध्ययन के अन्तर्गत यादृच्छिक न्यादर्श विधि का प्रयोग किया गया है। न्यादर्श के लिए शोधकर्ता ने सर्वप्रथम समग्र में विभक्त किया और प्रत्येक को समुचित वर्गों (जनसंख्या)

वर्ग से आवश्यक ईकाइयों का चयन किया गया है। अध्ययन के उद्देश्यों के अनुसार प्रयागराज जनपद केपूर्व माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् 400विद्यार्थी 250) सामान्य विद्यार्थी एवं150 विशिष्ट विद्यार्थी।का न्यादर्श हेतु चयन किया गया है (

उपकरण -प्रस्तुत शोध में पूर्व माध्यमिक स्तर के सामान्य एवं विशिष्ट विद्यार्थियों के व्यक्तित्व परीक्षण मापनी के रूप में **डॉ आशीष कुमार सिंह की .अरूण कुमार सिंह एवं डॉ."बहुआयामी व्यक्तित्व परीक्षण मापनी (डीपीआई) डिफरेंशियल पर्सनालिटी इन्वेंटरी)"** द्वारा छात्रों के विशिष्ट व्यक्तित्व लक्षणों को मापने के प्रयोग किया गया।

सांख्यिकी प्रविधियाँ -प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु मध्यमान, मानक विचलन, मानक त्रुटि एवं टी-अनुपात सांख्यिकी वििधियों का प्रयोग किया है।

प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्याः-

उद्देश्य सामान्य विद्यालयों में अध्ययनरत् शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों के व्यक्तित्व का **-01** तुलनात्मक अध्ययन।

H= $_{01}$ सामान्य विद्यालयों में अध्ययनरत् शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों के व्यक्तित्व का सार्थक प्रभाव पड़ता है।

तालिका सं० 1

सामान्य विद्यालयों में अध्ययनरत् शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों के व्यक्तित्व का मध्यमान, मानक विचलन एवं टीअनुपात-

क्र.सं.	व्यक्तित्व विकास की विमाएं	समूह	N	Mean	.S.D	-tratio
.1	निर्णयकता	शहरी सामान्य विद्यालय	125	8.79	0.96	2.16*
		ग्रामीण सामान्य विद्यालय	125	9.06	1.03	
.2	जिम्मेदारी	शहरी सामान्य विद्यालय	125	8.72	0.88	1.33*
		ग्रामीण सामान्य विद्यालय	125	8.88	1.02	
.3	भावनात्मक स्थिरता	शहरी सामान्य विद्यालय	125	11.94	0.84	1.98*
		ग्रामीण सामान्य विद्यालय	125	11.73	0.85	
.4	मित्रता	शहरी सामान्य विद्यालय	125	8.58	0.88	1.40
		ग्रामीण सामान्य विद्यालय	125	8.44	0.77	
.5	विषमलैंगिकता	शहरी सामान्य विद्यालय	125	09.06	1.63	3.64**
		ग्रामीण सामान्य विद्यालय	125	8.43	1.11	

.6	पुरुषत्व	शहरी सामान्य विद्यालय	125	9.39	1.56	2.84**
		ग्रामीण सामान्य विद्यालय	125	8.85	1.52	
.7	अहंकार या शक्ति	शहरी सामान्य विद्यालय	125	11.40	1.98	2.40*
		ग्रामीण सामान्य विद्यालय	125	11.20	1.75	
.8	जिज्ञासा	शहरी सामान्य विद्यालय	125	11.39	1.26	1.63
		ग्रामीण सामान्य विद्यालय	125	11.28	1.41	
.9	प्रभुत्व	शहरी सामान्य विद्यालय	125	11.53	0.80	1.40
		ग्रामीण सामान्य विद्यालय	125	11.32	1.56	
.10	आत्मअवधारणा-	शहरी सामान्य विद्यालय	125	08.56	0.49	1.83
		ग्रामीण सामान्य विद्यालय	125	08.45	0.49	

0.01/0.05 **/*पर सार्थक

तालिका-01 दर्शाती है कि टी-अनुपात के मान सामान्य विद्यालयों में अध्ययनरत् शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थी व्यक्तित्व के विषमलैंगिकता (3.64) एवं पुरुषत्व (2.84) आयामों के लिए 0.01 स्तर पर और समान्य विद्यालयों में अध्ययनरत् शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थी व्यक्तित्व के निर्णयकता (2.16), भावनात्मक स्थिरता (1.98) एवं अहंकार या शक्ति (2.40) आयामों के लिए 0.05 स्तर पर सार्थक है। अतः व्यक्तित्व के विषम लैंगिकता, पुरुषत्व, निर्णयकता, भावनात्मक स्थिरता एवं अंहकार या शक्ति आयामों से सम्बन्धित शून्य परिकल्पना को निरस्त किया जा सकता है और यह अनुमान लगाया जा सकता है कि सामान्य विद्यालयों में अध्ययनरत् शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थी व्यक्तित्व के विषमलैंगिकता, पुरुषत्व, निर्णयकता, भावनात्मक स्थिरता एवं अहंकार या शक्ति आयामों का एक-दूसरे से भिन्न हैं। व्यक्तित्व की धारणा पर शहरी एवं ग्रामीण सामान्य विद्यालयों के विद्यार्थियों के औसत अंकों के अवलोकन से, यह स्पष्ट है कि ग्रामीण सामान्य विद्यालय के विद्यार्थियों की तुलना में शहरी सामान्य विद्यालय के विद्यार्थियों में व्यक्तित्व के भावनारमक स्थिरता, विषम लैंगिकता, पुरुषख और अंहकार आयाम अधिक हैं एवं शहरी सामान्य विद्यालय के विद्यार्थियों की तुलना में ग्रामीण सामान्य विद्यालय के विद्यार्थियों में व्यक्तित्व के निर्णयकता आयाम अधिक है।

तालिका 01 यह भी दर्शाती है कि व्यक्तित्व के शेष आयामों अर्थात् जिम्मेदारी (1.33), मित्रता (1.40), जिज्ञासा (1.63), प्रभुत्व (1.40) एवं आत्म अवधारणा (1.83) के लिए टी-अनुपात 0.05 स्तर पर सार्थक नहीं है। इस प्रकार संबंधित शून्य परिकल्पना को स्वीकार किया जा सकता है। इसका अर्थ यह है कि ग्रामीण एवं शहही सामान्य विद्यालय के विद्यार्थी व्यक्तित्व के जिम्मेदारी, मित्रता, जिज्ञासा, प्रभुत्व एवं आत्म अवधारणा आयामों पर एक-दूसरे से भिन्त नहीं है।

उद्देश्य-02- विशिष्ट विद्यालयों में अध्ययनरत् शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों के व्यक्तित्व का तुलनात्मक अध्ययन।

H02 = विशिष्ट विद्यालयों में अध्ययनरत् शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों के व्यक्तित्व का सार्थक प्रभाव पड़ता है।

तालिका सं०2

विशिष्ट विद्यालयों में अध्ययनरत् शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों के व्यक्तित्व का मध्यमान, मानक विचलन एवं टीअनुपात-

क्र.सं.	व्यक्तित्व विकास की विमाएं	समूह	N	Mean	.S.D	-tratio
.1	निर्णयकता	शहरी विशिष्ट विद्यालय	90	8.62	1.03	1.81
		ग्रामीण विशिष्ट विद्यालय	60	8.91	1.00	
.2	जिम्मेदारी	शहरी विशिष्ट विद्यालय	90	8.38	0.91	3.13**
		ग्रामीण विशिष्ट विद्यालय	60	8.85	0.99	
.3	भावनात्मक स्थिरता	शहरी विशिष्ट विद्यालय	90	11.43	0.93	**2.61
		ग्रामीण विशिष्ट विद्यालय	60	11.77	0.91	
.4	मित्रता	शहरी विशिष्ट विद्यालय	90	8.72	0.85	1.50*
		ग्रामीण विशिष्ट विद्यालय	60	8.36	0.70	
.5	विषमलैंगिकता	शहरी विशिष्ट विद्यालय	90	11.05	1.00	3.**73
		ग्रामीण विशिष्ट विद्यालय	60	11.61	0.80	
.6	पुरुषत्व	शहरी विशिष्ट विद्यालय	90	6.88	0.77	3.75
		ग्रामीण विशिष्ट विद्यालय	60	6.43	0.86	
.7	अहंकार या शक्ति	शहरी विशिष्ट विद्यालय	90	10.62	0.65	3.**12
		ग्रामीण विशिष्ट विद्यालय	60	11.12	1.33	
.8	जिज्ञासा	शहरी विशिष्ट विद्यालय	90	10.39	0.72	3.**07
		ग्रामीण विशिष्ट विद्यालय	60	10.69	0.93	
.9	प्रभुत्व	शहरी विशिष्ट विद्यालय	90	10.43	0.65	3.4**7
		ग्रामीण विशिष्ट विद्यालय	60	11.09	1.75	
.10	आत्मअवधारणा-	शहरी विशिष्ट विद्यालय	90	08.56	0.85	3.83**
		ग्रामीण विशिष्ट विद्यालय	60	08.45	0.75	

0.01/0.05 **/*पर सार्थक

अतः व्यकित्व के जिमेंदारी, भावनात्मक-स्थिरता, विषम लैंगिकता,पुरुषत्व , जिज्ञासा, प्रभुत्व एवं आत्म अवधारणा, अहंकार या शक्ति आयामों से संबंधित शून्य परिकल्पना को निरस्त किया जा सकता है और यह अनुमान लगाया जा सकता है कि विद्यालयो में अध्ययनरत शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थी व्यक्तित्व के जिम्मेदारी, भावनात्मक स्थिरता, पुरुषत्व, अहंकार या शक्ति,जिज्ञासा, प्रभुत्व,आत्म अवधारणा एवं मित्रता आयाम एक दूसरे से भिन है। व्यतित्व की धारणा पर शहरी एवं ग्रामीण विशिष्ट विद्यालयों के विद्यार्थियों के औसत अंकों के अवलोकन से यह स्पष्ट है कि विशिष्ट विद्यालय के विद्यार्थियों में व्यक्तित्व के जिम्मेदारी, भावनात्मक स्थिरता,विषम लैंगिकता, अहंकार जिज्ञासा एवं प्रभुत्व आयाम अधिक है एवं ग्रामीण विशिष्ट विद्यालय के विद्यार्थियों कि तुलना में शहरी विशिष्ट विद्याय के विद्यार्थियों मे व्यक्तित्व के मित्रता,पुरुषत्व एवं आत्म अवधारणा आयाम अधिक है।

तालिका 02 यह भी दर्शाती है कि व्यक्तित्व के शेष आयाम अर्थात निर्णयकता (1.81) के लिए टी-अनुपात 0.05 स्तर पर सार्थक नहीं है। इस प्रकार सम्बन्धित शून्य परिकल्पना को स्वीकार किया जा सकता है। इसका अर्थ यह है कि ग्रामीण एवं शहरी विशिष्ट विद्यालय के विद्यार्थी व्यक्तित्व के निर्णयकता आयाम पर एक दुसरे से भिन्न नहीं है।

निष्कर्ष- उपरोक्त तालिकाओं के अध्ययनोंपरांत यह पाया गया कि ग्रामीण सामान्य विद्यालय के विद्यार्थियों कि तुलना में शहरी सामान्य विद्यालय में विद्यार्थियों के व्यक्तित्व कि भावनात्मकत स्थिरता,विषम लैंगिकता,पुरुषत्व और अहंकार शक्ति आयाम अधिक है एवं शहरी सामान्य विद्यालय के विद्यार्थियों की तुलना में ग्रामीण सामान्य विद्यालय के विद्यार्थियों में व्यक्तित्व के निर्णयकता आयाम है जबकि ग्रामीण एवं शहरी सामान्य विद्यालय के विद्यार्थी व्यक्तित्व के जिम्मेदारी, मित्रता, जिज्ञासा,प्रभुत्व एवं आत्म अवधारणा आयामों पर एक दुसरे से भिन्न नहीं हैं; विशिष्ट विद्यालय में अध्ययनरत ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थी व्यक्तित्व व्यक्तित्व के जिम्मेदारी,भावनात्मक स्थिरता, विषम लैंगिकता, पुरुषत्व, अहंकार या शक्ति,जिज्ञासा, प्रभुत्व आत्म अवधारणा एवं मित्रता आयाम एक दुसरे से भिन्न है जबकि व्यक्तित्व कि धारणा पर ग्रामीण एवं शहरी विशिष्ट विद्यालयों के विद्यार्थियों की तुलना करने पर यह स्पष्ट है कि विशिष्ट शहरी विद्यालय के विद्यार्थियों कि तुलना में विशिष्ट ग्रामीण विद्यालय के विद्यार्थियों में व्यक्तित्व के जिम्मेदारी, भावनात्मक स्थिरता, विषम लैंगिकता, अहंकार शक्ति एवं प्रभुत्व आयाम अधिक है एवं ग्रामीण विशिष्ट विद्यालय के विद्यार्थियों की तुलना में शहरी विशिष्ट विद्यालय के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व के मित्रता, पुरुषत्व एवं आत्म अवधारणा आयाम अधिक है जबकि व्यक्तित्व के निर्णयकता आयाम पर एक दुसरे से भिन्न है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- ऑलपोर्ट, जी डब्ल्यू .(1961), *व्यक्तित्व में पैटर्न और विकास,* न्यूयॉक् होल्ट विंस्टन।
- अरोड़ा, रीता एवं मारवाह, सुदेश)2007), *शिक्षा मनोविज्ञान एवं सांख्यिकी अध्ययन,* शिक्षा प्रकाशन, जयपुर,राजस्थान।
- पाठक पी) .डी.2007) *शिक्षा मनोविज्ञान,* विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
- पाण्डेय के) पी.2006) "शैक्षिक अनुसंधान" विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।
- भटनागर सुरेश)2009) *शिक्षा मनोविज्ञान,* लायन बुक डिपो, मेरठ।
- शर्मा आर) ए.2009) *शिक्षा अनुसंधान,* आर लाल बुक,डिपो मेरठ।
- अस्थाना रामनारायण व अस्थाना)1990), मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
- कपिल एस) के.2015) अनुसंधान विधियां, एचपी भार्गव बुक हाउस., आगरा।

Disclaimer/Publisher's Note:
The statements, opinions and data contained in all publications are solely those of the individual author(s) and contributor(s) and not of JNGBU and/or the editor(s). JNGBU and/or the editor(s) disclaim responsibility for any injury to people or property resulting from any ideas, methods, instructions or products referred to in the content.